बीर इंदर बनभौरी

ई-मेल-73birinder@gmail.com

नायक

जब वह घर में दाखिल हुआ तो उसकी पत्नी और बच्चे टीवी के सामने बैठे थे। सबने उसे लांबी में आते हुए तो देख लिया था, पर सभी उसे इग्नोर कर टीवी पर चल रहे बिग बॉस कार्यक्रम के मजे लेते रहे।

एक बार तो उसका मन टीवी बंद करने का हुआ। उसने अपने आप को संभाला और बेटे की ओर देखते हुए कहा, "बेटा, जिस कार्यक्रम का कोई मुँह-सिर ही नहीं, उसे देखने का क्या फायदा...

"पापा बस दस मिनट आह.. विक्रम और दिवांशु के बीच जमकर लड़ाई हो रही है.. यह देख लेने दो, पापा प्लीज..." टीवी स्क्रीन से नजरे हटाए बिना लड़के ने बहुत प्यारी आवाज में पिता से टीवी देखने की अनुमति मांगी।

दूसरी बार उसने अपने कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चों को टोकना ठीक नहीं समझा। वह चुपचाप अपने शयनकक्ष में प्रवेश कर गया। बिग बॉस के सेलिबर्टीज की आपस में लड़ने और एक-दूसरे को भद्दी भाषा बोलने के शब्द उस के कानों को सुनाई दे रहे थे। उसने जूते उतारे, कपड़े बदले, दस मिनट आराम किया और फिर मेज पर पढ़ी किताब उठाई और बिस्तर का सहारा लगाकर किताब पढ़ने लगा।

"देखो माँ कितनी भद्दी लगती है ये बंदरिया जैसी ....खुद को पता नहीं क्या समझती है... ना सूरत, ना बुद्धि, ना मौत।" उसे अपनी बेटी की आवाज सुनी। वह बिग बॉस की एक हस्ती के बारे में अपनी राय रख रही थीं।

"अरे वह देख साला नारद मुनि आग लगाऊ महकमा अगर मैं कहीं बिग बॉस के घर में होयुं तो इसका नाक तोड़ दू साले का..." यह आवाज मेरे बेटे की है।

"कुछ भी कहो, जिस तरह से विक्रम लड़ रहा है, इस बार बिग बॉस हाउस का चैंपियन यहीं बनेगा।" उसका बेटा फिर बोला।

"हाँ हाँ बिल्कुल भाई अगर वह कहीं फिल्मों में आ गया तो इंडस्ट्री का नंबर वन हीरो बनेगा।" उसकी बेटी ने कहा।

कुछ देर बाद जब उसने अपनी पत्नी को पानी का गिलास लेकर आते देखा तो वह समझ गया कि टीवी पर कमर्शियल ब्रेक आ गई है। उसे पानी का गिलास पकड़ा पत्नी ने टेबल पर रखा अखबार उठाया और पास की कुर्सी पर बैठ गई।

पत्नी ने अखबार पड़ते हुए कहा, "मुझे एक बात समझ नहीं आती, ये लोग पानी की टंकीयों पर चढ़ने का नाटक क्यों करते हैं, लोगों की हमदर्दी ऐसे नहीं मिलती.. साथ ही इतनी सरकार नौकरियां कहां से लाएगी?"

तब तक उसके बच्चे भी कमरे में आ गए। उन्होंने अपनी मां की बात सुन ली थी। उन्होंने ने भी अपनी मां की हाँ में हाँ मिला दी।

बच्चों और पत्नी के तेवर देखकर उनका चेहरा गंभीर हो गया, वह बहुत ही धैर्य से बोले, "बेरोजगारों को रोजगार देना सरकार की जिम्मेदारी है। जब इन बेरोजगारों की कोई नहीं सुनता तो ये टंकियों पर चढ़ जाते हैं। विचारे जिन्दा रहने के लिए फाइट करते हैं।" धैर्य से बोलते हुए उनकी आवाज कुछ सख्त हो गई, उन्होंने आंखों पर से चश्मा हटाया और फिर बोले, "मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम्हारी सोच को क्या हो गया है, तुम्हें बिग बॉस के किरदारों की अश्लील हरकतें पसंद है. और उनकी लड़ाई को ही असली लड़ाई समझ बैठे हो और वो ही तुम्हारे हीरो है जो असल में अपने हक के लिए लड़ रहे है उनकी लड़ाई को तुम लोग नाटक बता रहे हो।"

उसकी बेटी ने अपने पिता की ओर देखा। बात करते- करते पिता का चेहरा लाल हो रहा था। उसकी बेटी समझ गई थी कि अगर बात नहीं बदली गई तो मामला और गरमा सकता है। ऐसे समय में उसका भाई और मां एक तरफ होते और पिता दूसरी तरफ। उसने बातचीत को घुमाते हुए कहा, "डैड नहीं ऐसा नहीं है... न्यूज चैनल लगाते-लगाते अचानक से बिग बॉस लग गया, आपको तो पता ही है कि ट्यूशन के कारण हमारे पास समय ही कितना होता है टीवी देखने को।"

बेटी की बात सुनकर वे शांत हो गए। मामला शांत होता देख बेटी ने कोमल स्वर में कहा, "पापा, एक बात बताइए, "वैसे आपका फेवरेट हीरो कौन है?"

उसने अपनी बेटी का चेहरा देखा, फिर अपने हाथ में पकड़ी हुई किताब के कवर पर छपी देशभक्त करतार सिंह सराभा, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि की तस्वीरों तरफ। इन तस्वीरों के ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा था, "स्वतंत्रता संग्राम के असली नायक।"

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

बीर इंदर बनभौरी :बीर इंदर बनभौरी का पंजाबी लघुकथा का एक संग्रह आया है। पत्रकारिता और अध्यापन से जुड़े होने के कारण वह समाज में होने वाली हर छोटी-छोटी घटनाओं पर बारीकी से नजर रखते हैं, जो इनकी रचनाओं का आधार बनता है। लघुकथा संग्रह के अलावा, इन्होंने दो पुस्तकों का संपादन भी किया है।